IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 8, May 2022
Impact Factor: 6.252

प्रबन्ध काव्य प्रेमरामायण का तात्विक मूल्यांकन

Dr. Ramlala Sharma[1] and Rammilan[2]
Professor and Head, Department of Hindi[1]
Research Scholar, Department of Hindi[2]
Sanjay Gandhi Smriti Government PG College, Sidhi, Madhya Pradesh, India[1]
Awadhesh Pratap Singh University, Rewa, Madhya Pradesh, India[2]

महाकाव्य के लक्षणों एंव तत्वों के आधार पर प्रेमरामायण की समीक्षा

रामभक्ति धारा में मैथिल प्रेमोपासना के संत कवि प्रेमावतार स्वामी राजहर्षणदास जी महाराज ने सन्त समाज को दिशा–निर्देश देने के लिए और मैथिल सख्यरस पीठ के अधिष्ठाता, एंव श्रृंगार एंव माधुर्य भाव की भक्ति को निरन्तर प्रवाहित करने के लिए अपनी सुन्दर लेखिनी को चलाकर श्री प्रेमरामायण को सन्त समाज के लिए प्रस्तुत किया। स्वामी श्री रामहर्षणदास जी गद्य एंव पद्य साहित्य पर बराबर का अधिकार रखते थे। आधुनिक काल में प्रेमरामायण इनकी कालजयी रचना है। यह पबन्धकाव्य है। महाकाव्य के तत्वों के आधार पर प्रेमरामायण की समीक्षा की गयी है–

महाकाव्य के स्वरूप और धारणा का विवेचन करने से पहले यहा पर हम महाकाव्य के विषय में विभिन्न विद्वानों के विचारों को देते है–

सर्गबन्धों महाकाव्यमारब्धं संस्कृतेन यत्।।24।।
तादात्म्यमजहत्तत्र तत्समं नातिदुष्यति।
इतिहास कथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयम।।25।।
चतुवर्गफलं विश्वव्याख्यातं नायकाख्यां।
समानवृत्ति निर्व्यूढः कैशिकी वृत्तिकोमलः।।34।।

उपर्युक्त विवरण से महाकाव्य सम्बन्धी विशेषताएं निम्नलिखित है।

1. महाकाव्य सर्गबध्य रचना है ये सर्ग विभिन्न वृत्तान्तवाले एंव विस्तृत होते है।
2. उसमें शक्करी, अतिशक्करी, जगती, अतिजगती, त्रिष्टुप् जातिवाले पुष्पिताग्रादि छन्दों का प्रयोग होता है।
3. इतिहास प्रसिद्ध अथवा किसी महात्मा, सज्जन व्यक्ति के वास्तविक जीवन पर आश्रित महाकाव्य का कथानक होता है।
4. उसमें नगर, वन, पर्वत सूर्य चन्द्र, आश्रम, वृक्ष, वन, उपवन, जल–कीडा, मधुपान–उत्सव आदि का वर्णन होता है। समस्त रीति रिवाजों, वृत्तियों और रसों का समावेश होता है।
5. उक्तिवैचित्र्य की प्रधानता होने पर भी उसमें प्राण के रूप में रस ही व्याप्त रहता है।
6. उसमें विश्वविख्यात नायक के नाम से धर्म, काम, अर्थ, मोक्ष–चतुर्वर्ग की प्राप्ति होती है।
7. महाकाव्य का प्रारम्भ संस्कृति भाषा से किया जाता है, उसमें तत्सम एंव तद्भव प्राकृतों का प्रयोग नही होना चाहिए।

इस प्रकार से आचार्य दण्डी ने भी इन्ही विशेषताओं को प्रकट करने वाला महाकाव्य का लक्षण बताया है।

सर्गबन्धों महाकाव्यमुच्यते तस्य लक्षणम्।
आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशों वापि तन्मुखम्।।14।।
इतिहास कथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयम्।
चतुर्वर्गफलोपेतं चतुरोदात्तनायकम्।।15।।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 8, May 2022
Impact Factor: 6.252

दंडी के द्वारा प्रस्तुत उपर्युक्त लक्षण में बहुत–सी विशेषताएँ अग्निपराण के लक्षण की है, परन्तु बहुत–सी नवीन और महाकाव्य की अधिक व्यापक धारणा को स्पष्ट करने वाली विशेषताएं भी सम्मिलित हो गई हैं। 'अग्निपुराण' के लक्षण के समान विशेषताएं निम्नलिखित हैं–

1. महाकाव्य सर्गबन्ध रचना है, अनतिविस्तृत सर्गों में कथा का सुसंगठन सन्धि आदि के द्वारा इसमें होता है।
2. कथावृत्त इतिहास अथवा किसी सज्जन के सच्चे (कल्पित नहीं) जीवन पर आश्रित रहता है।
3. इसमें नगर, पर्वत, चन्द्र सूर्योदय, उपवन, जलक्रीड़ा, मधुपान से युक्त उत्सवों आदि का वर्णन होता है।
4. उदात्त गुणों से युक्त चतुर नायक की चतुर्वर्ग की प्राप्ति का वर्णन इसमें होता है।

महाकाव्य के सम्बन्ध में साहित्य दर्पण में दिये हुए लक्षणों में देखने का मिलता है–

सर्गबंधों महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।।315।।

सद्वंशः क्षत्रियोवापि धीरोदात्तगुणान्वितः।

एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा।।316।।

उपर्युक्त विवरण में महाकाव्य के प्रत्येक अंग की स्पष्ट धारणा प्रकट की गई है।। इसे हम सात विभागों में व्यवस्थित कर सकते हैं–1 कथावस्तु और उसका संगठन, 2. नायक, 3. रस, 4. छन्द, 5. वर्णन, 6. नाम, 7. उद्देश्य।

1. कथावस्तु

महाकाव्य की कथा विस्तृत और पूर्ण जीवन–गाथा होती है जिसे नाटक की संधियों के नियमानुसार आठ से अधिक सर्गों में संगठित होना चाहिए। कथा का प्रारंभ आशीर्वचन, मंगलाचरण आदि से होना चाहिए और सर्ग के अन्त में आगामी सर्ग की कथा की सूचना होनी चाहिए। महाकाव्य की कथा इतिहास से अथवा किसी महापुरुष सज्जन को वास्तविक जीवन–गाथा के आधार पर होनी चाहिए।

2. नायक

महाकाव्य का नायक कोई देवता, उच्च कुल में उत्पन्न क्षत्रिय अथवा एक वंश में उत्पन्न हुए राजा और अनेक वंशों में उत्पन्न राजा हो सकते हैं, परन्तु उनमें धीरोदात्त' गुणों का समावेश होना आवश्यक है। ऐसे व्यक्ति का चरित्र निश्चय ही समाज में सदवत्तियों का विकास करनेवाला और दुर्वृत्तियों का विनाश करनेवाला होगा।

3. रस

महाकाव्य में सभी रसों का वर्णन आवश्यक है। व्यापक जीवन के विविध वृत्तान्तवाले कथानक में विभिन्न रसों का होना आवश्यक है, परन्तु कथावस्तु और चरित्र में एक निश्चित एवं क्रमबद्ध विकास के लिए श्रृंगार, वीर और शान्त इन तीन रसों में से एक रस का प्रधान होना आवश्यक माना गया है। अन्य रस गौण रूप में आने चाहिए। इस प्रकार एक महाकाव्य में जीवन की विविध सुख–दुःखमयी परिस्थितियों का संघर्षपूर्ण चित्रण अनिवार्य हो जाता है।

4.छन्द

कथा के विकास और रसप्रवाह की अबाध गति के लिए एक सर्ग में एक ही छंद के प्रयोग का नियम है, सर्ग के अन्त में छन्द बदलना चाहिए। हाँ, छन्द–चमत्कार, वैविध्य या अद्भुत रस की निष्पत्ति के लिए किसी एक सर्ग में अनेक छन्दों का प्रयोग भी किया जा सकता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 8, May 2022
Impact Factor: 6.252

5. वर्णन

महाकाव्य में विविधता और यथार्थता दोनों ही का होना आवश्यक है अतः इसके भीतर जीवन के सभी दृश्यों, प्रकृति के विभिन्न रूपों और विविध भावों का वर्णन होना चाहिए। महाकाव्य में इस प्रकार के अनेक सांस्कृतिक चित्रण स्थान प्राप्त करते हैं।

जिनका सामाजिक मूल्य और महत्त्व भी होता है। इतने बड़े महाप्रबन्ध का प्रभाव समाज पर पड़े बिना नहीं रह सकता, अतः वर्णन के भीतर कहा–कहा प्रशसा आरजनों की निन्दा का भी विधान है जिससे कि समाज के भीतर सदभावना के विकास की चेतना के संस्कार बनते और गहराते जायें।

6. नाम

महाकाव्य का नाम कवि, नायक या कथातत्त्व के आधार पर होता है जिसस उसक द्वारा या तो नायक या कवि या मख्य घटना अथवा प्रतिपाद्य का ज्ञान हो सक। ख्यात वत्त होने के कारण उसके सम्बन्ध के भाव हमारे भीतर पहले ही से बने होत ह जो वर्णन के द्वारा जाग्रत हो जाते हैं।

7. उद्देश्य

महाकाव्य का उद्देश्य चतुर्वर्ग–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति मानी गई है। इसका विश्लेषण करें, तो हम देख सकते हैं कि नायक या तो किसी परोपकार के कार्य या सिद्धान्त की रक्षा के लिए अपने जीवन को व्यतीत करता है, या विजय द्वारा किसी समृद्धि को प्राप्त करता है अथवा अपना अभीष्ट किन्तु दुर्लभ कार्य सिद्ध करता है, या मोक्ष, परमधाम, लोक में सर्वप्रियता, अलौकिक शक्ति आदि पाता है। इन उद्देश्यों की सिद्धि के लिए संघर्ष, साधना, चरित्र–विकास, उच्च गुण आवश्यक हैं। इनका चित्रण विभिन्न परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में किया जाता है। अतएव महाकाव्य एक यगप्रवर्तनकारी संघर्ष–चित्रण या सांस्कृतिक उद्घाटन का महान् कार्य करता है या एक लोकप्रिय, महान व्यक्तित्व का चित्रण करता है। इस प्रकार की महानता के बिना महाकाव्य में उपर्युक्त समस्त विशेषताएँ नहीं आ सकती हैं।

उपर्युक्त विशेषताओं को लेकर लिखा गया महाकाव्य वास्तव में विश्वविख्यात रचना होने का गौरव रखता है। इस प्रकार महाकाव्य सम्बन्धी पाश्चात्य् धारणा का विश्लेषण करने पर हम पाँच मुख्य बातें स्पष्ट कर सकते हैं–1. कथानक, 2. चरित्र–चित्रण, 3. वर्णन, 4. शैली और 5. उद्देश्य।

कथानक–

महाकाव्य का कथानक ऐतिहासिक होना चाहिए, पर उसमें कुछ विद्वानों के मतानुसार काल्पनिक घटनाओं का भी समावेश हो सकता है। उसके अन्तर्गत महत्तपूर्ण

चरित्र–चित्रण

चरित्र–चित्रण में नायक पर ही विशेष ध्यान दिया गया है। उसे तिव्यक्ति होना चाहिए। कुछ लोग उसे सम्राट् या महापुरुष तक ही रखते हैं। पर इतना अवश्य है कि वह चाहे जो हो, उसमें उच्च गुणों का समावेश हो। वह प्रतिष्ठित परिवार का व्यक्ति हो, यह सभी मानते हैं। नायक के कार्य ऐसे होने चाहिए जिसकी सभी लोग प्रशंसा कर सकें।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 8, May 2022
Impact Factor: 6.252

वर्णन

पाचात्य धारणा के अनुसार महाकाव्य वर्णनप्रधान काव्य है। आख्यान और महाकाल दोनों को धारणा इसमें सम्मिलित है। ऐसी दशा में वर्णन–सम्बन्धी विशेषताएँ इसमें आवश्यक हैं। कुछ लोगों के विचार से समस्त घटनाओं का वर्णन अत्यन्त रोचक ढंग से होना चाहिए जिससे जीवन के दृश्य सजीवता के साथ सामने प्रस्तुत हो सकें। पष्ठभमि. घटनाओं, कार्यों और चरित्रों–सबका वर्णन द्वारा ही इसमें उद्घाटन होता है।

शैली

कुछ विद्वानों का विचार है कि एपिक में वीर–छन्द का प्रयोग होना चाहिए। परन्तु यह तभी हो सकता है जब हम उसे केवल वीरभाव के वर्णन तक ही सीमित रखें। एपिक में प्रेम, भक्ति, करुणा आदि भावों का भी वर्णन होता है, अतः उसके अनुरूप छन्दों का प्रयोग ही उचित कहा जायेगा। इसलिए शैली विषय और वर्णन के अनुरूप होनी चाहिए।

उद्देश्य

उद्देश्य के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। कुछ प्राचीन विद्वान् इसका उद्देश्य नैतिक और धार्मिक मानते हैं, पर अरिस्टॉटिल इसका उद्देश्य सत्य का उद्घाटन और आनन्द मानता है। इसमें सन्देह नहीं कि संकीर्ण नैतिकता या धार्मिकता ही इसका उद्देश्य नहीं हो सकता। यह महान् उद्देश्य को व्यापक प्रभाव के साथ प्रस्तुत करता है, अतः महाकाव्य में आनन्द और मनोरंजन स्वतः ही समाविष्ट हो जाते हैं।

यहाँ हम यह देखते हैं कि महाकाव्य की विशेषताओं का विश्लेषण संस्कृत साहित्य में विशेष विस्तृत और तथ्यपूर्ण है जिसमें उसका अपना निजी स्वरूप विकसित हो पाया है। फिर भी कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने महाकाव्य की धारणा का तथ्यपूर्ण विवेचन किया है जो महाकाव्य के गौरव के अनुकूल है।

प्रेमावतार स्वामी श्री राम हर्षणदास जी द्वारा रचित प्रेमरामायण महाकाव्य है। महाकाव्य के लक्षणों एंव तत्वों के आधार पर खरा एंव उपयुक्त है। प्रेमरामायण में सात काण्ड है। जो महाकाव्य का प्रमुख लक्षण है।

1. मिथिलाकाण्ड
2. साकेत काण्ड
3. चित्रकूट काण्ड
4. वनविरह काण्ड
5. समप्रयोग काण्ड
6. ज्ञान काण्ड
7. प्रस्थान काण्ड

जो महाकाव्य में प्रेमरामायण सर्ग बध्य रचना है ये सर्ग विभिन्न वृतान्त वाले एंव विस्तृत होते है प्रेमरामायण में इतिहास प्रसिद्धि घटना एंव भगवान श्रीराम एंव उसके साले श्री लक्ष्मीनिधि जी महाराज का भी वर्णन है।

सन्दर्भ सूची–

1. विनय पत्रिका (भूमिका) : डॉ. गोपीनाथ तिवारी, पृ. 118
2. श्रीहरिभक्तिरसामृतसिन्धु 2/1/5–6
3. काव्य दर्पण : पं. रामदहिन मिश्र, पृ. 214

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 8, May 2022
Impact Factor: 6.252

4. नारद भक्ति सूत्र–2 'कल्याण' अंक 39, (डॉ. राधाकृष्णन का आलेख–भगवान् की भक्ति का विशुद्ध पथ), पृ. 27
5. श्री प्रेम रामायण : स्वामी रामहर्षणदास, नम्र निवेदन का पृ. 7
6. श्री प्रेम रामायण : स्वामी रामहर्षणदास, नम्र निवेदन का पृ. 3
7. श्री प्रेम रामायण : स्वामी रामहर्षणदास, नम्र निवेदन का पृ. 8
8. ध्यान वल्लरी : स्वामी रामहर्षणदास, छन्द 63
9. ध्यान वल्लरी : स्वामी रामहर्षणदास, छन्द 116
10. प्रेम वल्लरी : स्वामी रामहर्षणदास, पद संख्या 51
11. मिथिलापुरी : स्वामी रामहर्षणदास, पद संख्या 3
12. प्रेम प्रभा : स्वामी रामहर्षणदास, प्रथमखण्ड, पद 16
13. प्रेम प्रभा : स्वामी रामहर्षणदास, द्वितीयखण्ड, पद 19
14. श्री सीता जन्म प्रकाश : स्वामी रामहर्षणदास, 28/7–11, 28
15. श्री सीता जन्म प्रकाश : स्वामी रामहर्षणदास, 36/1–8, 36
16. श्री सीता जन्म प्रकाश : स्वामी रामहर्षणदास, दोहा 37 ख
17. लीला विलास : स्वामी रामहर्षणदास, दोहा 2
18. लीला विलास : स्वामी रामहर्षणदास, दोहा 17/2